يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تَكُونُواْ كَٱلَّذِينَ كَفَرُواْ وَقَالُواْ
لِإِخۡوَٰنِهِمۡ إِذَا ضَرَبُواْ فِي ٱلۡأَرۡضِ أَوۡ كَانُواْ غُزًّى لَّوۡ كَانُواْ
عِندَنَا مَا مَاتُواْ وَمَا قُتِلُواْ لِيَجۡعَلَ ٱللَّهُ ذَٰلِكَ حَسۡرَةٗ فِي
قُلُوبِهِمۡۗ وَٱللَّهُ يُحۡيِۦ وَيُمِيتُۗ وَٱللَّهُ بِمَا تَعۡمَلُونَ بَصِيرٞ ١٥٦
وَلَئِن قُتِلۡتُمۡ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ أَوۡ مُتُّمۡ لَمَغۡفِرَةٞ مِّنَ ٱللَّهِ وَرَحۡمَةٌ
خَيۡرٞ مِّمَّا يَجۡمَعُونَ ١٥٧ وَلَئِن مُّتُّمۡ أَوۡ قُتِلۡتُمۡ لَإِلَى ٱللَّهِ
تُحۡشَرُونَ ١٥٨ فَبِمَا رَحۡمَةٖ مِّنَ ٱللَّهِ لِنتَ لَهُمۡۖ وَلَوۡ كُنتَ فَظًّا
غَلِيظَ ٱلۡقَلۡبِ لَٱنفَضُّواْ مِنۡ حَوۡلِكَۖ فَٱعۡفُ عَنۡهُمۡ وَٱسۡتَغۡفِرۡ
لَهُمۡ وَشَاوِرۡهُمۡ فِي ٱلۡأَمۡرِۖ فَإِذَا عَزَمۡتَ فَتَوَكَّلۡ عَلَى ٱللَّهِۚ إِنَّ ٱللَّهَ
يُحِبُّ ٱلۡمُتَوَكِّلِينَ ١٥٩ إِن يَنصُرۡكُمُ ٱللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمۡۖ وَإِن
يَخۡذُلۡكُمۡ فَمَن ذَا ٱلَّذِي يَنصُرُكُم مِّنۢ بَعۡدِهِۦۗ وَعَلَى ٱللَّهِ
فَلۡيَتَوَكَّلِ ٱلۡمُؤۡمِنُونَ ١٦٠ وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَن يَغُلَّۚ وَمَن يَغۡلُلۡ
يَأۡتِ بِمَا غَلَّ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِۚ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفۡسٖ مَّا كَسَبَتۡ
وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُونَ ١٦١ أَفَمَنِ ٱتَّبَعَ رِضۡوَٰنَ ٱللَّهِ كَمَنۢ بَآءَ
بِسَخَطٖ مِّنَ ٱللَّهِ وَمَأۡوَىٰهُ جَهَنَّمُۖ وَبِئۡسَ ٱلۡمَصِيرُ ١٦٢ هُمۡ
دَرَجَٰتٌ عِندَ ٱللَّهِۗ وَٱللَّهُ بَصِيرُۢ بِمَا يَعۡمَلُونَ ١٦٣ لَقَدۡ مَنَّ ٱللَّهُ
عَلَى ٱلۡمُؤۡمِنِينَ إِذۡ بَعَثَ فِيهِمۡ رَسُولٗا مِّنۡ أَنفُسِهِمۡ يَتۡلُواْ
عَلَيۡهِمۡ ءَايَٰتِهِۦ وَيُزَكِّيهِمۡ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡحِكۡمَةَ وَإِن
كَانُواْ مِن قَبۡلُ لَفِي ضَلَٰلٖ مُّبِينٍ ١٦٤ أَوَلَمَّآ أَصَٰبَتۡكُم مُّصِيبَةٞ

قَدْ أَصَبْتُم مِّثْلَيْهَا قُلْتُمْ أَنَّىٰ هَٰذَا ۖ قُلْ هُوَ مِنْ عِندِ
أَنفُسِكُمْ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٦٥﴾ وَمَآ أَصَٰبَكُمْ
يَوْمَ ٱلْتَقَى ٱلْجَمْعَانِ فَبِإِذْنِ ٱللَّهِ وَلِيَعْلَمَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٦٦﴾
وَلِيَعْلَمَ ٱلَّذِينَ نَافَقُوا۟ ۚ وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا۟ قَٰتِلُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ
أَوِ ٱدْفَعُوا۟ ۖ قَالُوا۟ لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّٱتَّبَعْنَٰكُمْ ۗ هُمْ لِلْكُفْرِ
يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْإِيمَٰنِ ۚ يَقُولُونَ بِأَفْوَٰهِهِم مَّا لَيْسَ فِى
قُلُوبِهِمْ ۚ وَٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ﴿١٦٧﴾ ٱلَّذِينَ قَالُوا۟ لِإِخْوَٰنِهِمْ
وَقَعَدُوا۟ لَوْ أَطَاعُونَا مَا قُتِلُوا۟ ۗ قُلْ فَٱدْرَءُوا۟ عَنْ أَنفُسِكُمُ
ٱلْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿١٦٨﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ ٱلَّذِينَ قُتِلُوا۟ فِى
سَبِيلِ ٱللَّهِ أَمْوَٰتًۢا ۚ بَلْ أَحْيَآءٌ عِندَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿١٦٩﴾ فَرِحِينَ
بِمَآ ءَاتَىٰهُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِٱلَّذِينَ لَمْ
يَلْحَقُوا۟ بِهِم مِّنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ﴿١٧٠﴾ ۞ يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ ٱللَّهِ وَفَضْلٍ وَأَنَّ ٱللَّهَ
لَا يُضِيعُ أَجْرَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٧١﴾

Theme	
Life and death is from Allah. Consult before making a decision, once decision is made then be firm. Put your trust in Allah. Dignity of the Rasool. Lessons to be learned from the Battle of Uhud. Those who are slain in the cause of Allah are	ज़िंदगी और मौत अल्लाह तआला के इख़्तियार में हैं। फ़ैसला करने से पहले मशवरा करो, और जब फ़ैसला कर लो तो उस पर साबित-क़दम रहो। अल्लाह तआला पर तवक्कुल करो। रसूल ﷺ की अज़मत व शान। ग़ज़वा-ए-उहुद से हासिल होने वाले असबाक़। जो लोग अल्लाह तआला की राह

not dead.	में शहीद किए जाते हैं, वो मुर्दा नहीं हैं।
Tarjumani	
O believers! Do not be like the unbelievers who speak of those brethren of theirs who die during their travels on the earth or while engaged in fighting: "Had they but stayed with us they would not have died or been killed." Allah makes such thinking a cause of regret and anguish in their hearts. It is Allah who gives life and death. Allah is observant of all your actions. If you should die or get killed in the cause of Allah, His forgiveness and mercy will be far better than all the riches you could gather. Whether you die or get killed, all of you will be brought before Allah. O Muhammad, it is a great Mercy of Allah that you are very gentle with them; had you been rough or hard hearted, they would have deserted you. Therefore, pardon them and ask Allah's forgiveness for them. Consult them in the conduct of affairs, and when you make a decision to do something, then put your trust in Allah (hold fast to your decision). Allah loves those who put their trust in Him. If Allah helps you, then there is none who can overcome you. If He forsakes you, then who else is there other than Him who can help you? Therefore,	ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, काफिरों की-सी बातें न करो जिनके अज़ीज़ व अकारिब अगर कभी सफ़र पर जाते हैं या जंग में शरीक होते हैं (और वहाँ किसी हादसे से दो-चार हो जाते हैं) तो वे कहते हैं कि अगर वे हमारे पास होते तो न मारे जाते और न क़त्ल होते	अल्लाह इस क़िस्म की बातों को उनके दिलों में हसरत व अन्दोह का सबब बना देता है, वरना दरअस्ल मारने और जिलानेवाला तो अल्लाह ही है और तुमरी तमाम हरकत पर वही निगरा है	अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की जो रहमत और बखशिश तुम्हारे हिस्से में आएगी वह उन सारी चीज़ों से ज़्यादा बेहतर है जिन्हें ये लोग ज़मा करते हैं	और खाह तुम मरो या मारे जाओ, बहरहाल तुम सबको सिमटकर जाना अल्लाह ही कीतरफ़ है	(ऐ पैग़म्बर) यह अल्लाह की बड़ी रहमत है कि तुम इन लोगों के लिए बहुत नर्म मिज़ाज वाके हुए हो	वरना अगर कहीं तुम तुन्दखू और संगदिल होते तो ये सब तुम्हारे गिरदोपेश से छँट जाते	इनके कुसूर माफ़ कर दो, इनके हक़ में दुआ-ए-मगफिरत करो, और दीन के काम में इनको भी शरीके-मशविरा रखो	फिर जब तुम्हारा अज्म किसी राय पर मुस्तहकम हो जाए तो अल्लाह पर भरोसा करो, अल्लाह को वे लोग पसन्द हैं जो उसी के भरोसे पर काम करते हैं	अल्लाह तुम्हारी मदद पर हो तो कोई ताक़त तुमपर ग़ालिब आनेवाली नहीं, और वह तुम्हें छोड़ दे, तो

in Allah let the believers put their trust. It is not conceivable that any Prophet would hold back from the spoils of war; for anyone who holds back shall bring along whatever he has been withholding on the Day of Resurrection; then every soul shall be paid back in full what it has earned and they shall not be dealt with unjustly. Can it be conceivable that a person who is seeking the good pleasure of Allah will be like the one who has incurred the wrath of Allah and is ultimately doomed to hell, which is an evil refuge? These two kinds of people have quite different levels in the sight of Allah; Allah is observant of all their actions. Allah has done a great favor to the believers that He raised among them a Rasool from among themselves, reciting to them the Revelations of Allah, sanctifying them, and teaching them the Book and Wisdom, although before this, they were in manifest error. The How is it that when you are afflicted with a loss, after you yourselves had inflicted losses twice as heavy upon your enemy in the Battle of Badr, you exclaimed: "Whose fault was that?" Say to them: "It was your own fault," Surely, Allah has power over everything. misfortune which befell you when the two armies met in the Battle of Uhud was with the leave of	उसके बाद कौन है जो तुम्हारी मदद कर सकता हो? पस जो सच्चे मोमिन हैं उनको अल्लाह ही पर बरोसा रखना चाहिए	किसी नबी का यह काम नहीं हो सकता कि वह खियानत कर जाए--- और जो कोई खियानत करे तो वह अपनी खियानत समेत कियामत के रोज़ हाज़िर हो जाएगा, फिर हर मुतनफ्फ़िस को उसकी कमाई का पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा और किसी पर कुछ जुल्म न होगा--- भला यह कैसे हो सकता है कि जो शख्स हमेशा अल्लाह की रिज़ा पर चलनेवाला हो वह उस शख्स जैसे काम करे जो अल्लाह के ग़ज़ब में घिर गया हो और जिसका आख़िरी ठिकाना जहन्नम हो जो बदतरीन ठिकाना है? अल्लाह के नज़दीक दोनों क़िस्म के आदमियों में बदरजहा फ़र्क है और अल्लाह सबके आमाल पर नज़र रखता है	दरहकीकत अहले-ईमान पर तो अल्लाह ने बहुत बड़ा एहसान किया है कि उनके दरमियान ख़ुद उन्हीं में से एक ऐसा पैग़म्बर उठाया जो उसकी आयात उन्हें सुनाता है, उनकी जिन्दगियों को सँवारता है और उनको किताब और दानाई की तालीम देता है, हालाँकि इससे पहले यही लोग सरीह गुमराहियों में पड़े हुए थे	और यह तुम्हारा क्या हाल है कि जब तुमपर मुसीबत आ पड़ी तो तुम कहने लगे यह कहाँ से आई? हालाँकि (जंगे-बद्र में) इससे दुगुनी मुसीबत तुम्हारे हाथों (फ़रीके-मुखालिफ़ पर) पड़ चुकी है	ऐ नबी, इनसे कहो, यह मुसीबत अपनी लाई है, अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है	जो नुकसान लड़ाई के दिन तुम्हें पहुँचा वह अल्लाह के इज़्न से था और इसलिए था कि अल्लाह देख ले कि तुममें से मोमिन

Allah so that He might know the true believers and know the hypocrites. When It was said to them: "Come fight for the cause of Allah or at least defend yourselves," they replied: "Had we known how to fight, we would certainly come with you." On that day, they were scarer to unbelief than to belief, for they uttered with their mouths what was not in their hearts. Allah is quite aware of what they were concealing Such are the ones who, as they sat at home, said of their brothers: "Had they listened to us, they would not have been killed." Ask them: "Avert death from your own selves, when it comes to you, if you speak the truth. Never think of those who are slain in the cause of Allah are dead. Nay, they are alive, and are being well provided for by their Rabb. They are pleased with what Allah has given them with His grace, and they are also happy to think that there is nothing to fear or to grieve for those believers whom they have left behind and who have not yet joined them in their bliss. They feel happy to have received Allah's grace and bounty and have come to know that most surely, Allah does not waste the reward of the believers.	कोण	वे मुनाफ़िक कि जब उनसे कहा गया, "आओ अल्लाह की राह में जंग करो या कम-अज़-कम (अपने शहर की) मुदाफ़अत ही करो" तो कहने लगे, "अगर हमें इल्म होता कि आज जंग होगी तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते |" यह बात जब वे कह रहे थे उस वक़्त वे ईमान की बनिस्बत कुफ़्र से ज़्यादा क़रीब थे	वे अपनी ज़बानों से वे बातें कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं होतीं, और जो कुछ वे दिलों में छिपाते हैं अल्लाह उसे ख़ूब जानता है	ये वही लोग हैं जो ख़ुद तो बैठे रहे और उनके जो भाई-बन्द लड़ने गए और मारे गए उनके मुताल्लिक उन्होंने कह दिया कि अगर वे हमारी बात मान लेते तो न मारे जाते	उनसे कहो अगर तुम अपने इस कौल में सच्चे हो तो ख़ुद तुम्हारी मौत जब आए, उसे टालकर दिखा देना	जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल हुए हैं उन्हें मुर्दा न समझो, वे तो हक़ीकत में ज़िन्दा हैं, अपने रब के पास रिज्क पा रहे हैं, जो कुछ अल्लाह ने अपने फज्ल से उन्हें दुया है उसपर ख़ुश व ख़ुर्रम हैं, और मुत्मइन हैं कि जो अहले-ईमान उनके पीछे दुनिया में रह गए हैं और अभी वहाँ नहीं पहुँचे हैं उनके लिए भी किसी खौफ़ और रंज का मौक़ा नहीं है	वे अल्लाह के इनाम और उसके फज्ल पर शादाँ व फारहाँ हैं और उनको मालूम हो चुका है कि अल्लाह मोमिनों के अज्र को जाया नहीं करता	
Tafsir	
